

मॉरीशस की हिंदी पत्रकारिता के उद्भव और विकास में प्रह्लाद रामशरण का योगदान

[Contribution of Pahlad Ramsufran in the origin and development of Hindi Journalism in Mauritius]

सर्वेश तिवारी

मॉरीशस में पत्रकार

Email: tsarveshko@hotmail.com

About the Author

Sarvesh Tiwari is a Mauritius based senior journalist with about 27 years of experience with leading news papers and news channels, he has been instrumental in launching various TV channels in India and taking them to new heights. In past, he has been Managing Editor of India News Channel and was associated in various capacities with brands like TV TODAY [India Today Group], Zee News, HT Media, News Nation, ND TV, All India Radio. He is visiting Faculty, Examiner and Expert panellist for quite a many reputed institutions including his Alma Mater Indian Institute of Mass Communication, New Delhi. He is also Pursuing his PhD with affirms his keen interest in academics and allied activities. He has also written papers and books. In 2018, Sarvesh received the Patrakar Bhushan Award for fair and bold Journalism.

Note in English

After going through the files of Mauritius's Hindi newspapers and journals, many elements have come to light. First, not a single country outside India has published so many newspapers and periodicals in Hindi Language. Secondly, many Indo-Mauritian writers and journalists have been honoured in India for having contributed in the top newspapers and journals of India. Thirdly, the panorama of Arya Samajist papers has been quite larger than the Sanatanist papers. Fourthly, the contents of the newspapers in the twenties were limited to social and religious matters rather than political and literary. In conclusion, then, having examined the situation of modern standard Hindi in Mauritius, it has become clear that the cultivation of Hindi and its literature could be taken a great deal further without disrupting any other element in the composite culture of Mauritius.

शोध सार

मॉरीशस की हिंदी पत्रकारिता के उद्भव और विकास में प्रह्लाद रामशरण का योगदान अतुल्यनीय है। वजह है इस देश का इतिहास। इस देश में पहले डच फिर फ्रेंच और अंत में अंग्रेजी का प्रभाव रहा। यहाँ हिंदी का विकास इन्ही भाषाओं के साथ हुआ है। ऐसे देश में जहाँ फ्रेंच का बोलबाला हो वहाँ हिंदी को जीवित रखना आसान काम नहीं है। भारत के बाहर कई देशों में हिंदी में साहित्य सृजन हो रहा है, परंतु सृजनात्मक साहित्य की जो प्राणवत्ता और जीवंतता मॉरीशस के हिंदी साहित्य में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

इस आलेख में मॉरीशस की हिंदी पत्रकारिता और प्रह्लाद रामशरण की भूमिका का वर्णन है। इसमें आर्यसमाज की पत्रकारिता, सनातन धर्म की हिंदी पत्रकारिता और प्रह्लाद रामशरण पर शोध के साथ लिखा गया है। साथ ही हिंदी पत्रकारिता में धार्मिक संस्थाओं की क्या भूमिका है इसका भी उल्लेख है। जिसमें हिंदी को लेकर इस देश में काफी संभावनाएं नजर आती हैं। मॉरीशस पहला ऐसा देश है जहाँ सबसे पहले संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को स्थान मिले, का प्रस्ताव भी पारित हुआ। हिंदी

का कोई दैनिक समाचार पत्र नहीं होने के बावजूद मॉरीशस भारतेतर देशों में पहला राष्ट्र है जहाँ हिंदी को अधिक मान्यता है और उसका रचना संसार सशक्त है।
बीजशब्द- मॉरीशस, हिंदी पत्रकारिता, प्रह्लाद रामशरण

शोध आलेख

I. प्रस्तावना

मॉरीशस की पत्रकारिता पर भले ही कई किताबें लिखी गई हो, लेकिन हिंदी पत्रकारिता को लेकर अब भी संघर्ष खत्म नहीं हुआ है। जिन लोगों ने भी मॉरीशस की संस्कृति और साहित्य को करीब से जाना और महसूस किया होगा, निसंदेह उन्हें प्रह्लाद रामशरण का नाम जरूर मालूम होगा। अपने शोध

कार्य के सिलसिले में मॉरीशस का इतिहास, हिंदी साहित्य और पत्रकारिता से जुड़ी कई पुस्तकों, पत्रिकाओं, दस्तावेजों को पढ़ने और समझने का अवसर मिल रहा है। समाज के अलग-अलग वर्ग के लोगों के बीच चर्चा और साक्षात्कार के आधार पर कह सकते हैं कि प्रह्लाद रामशरण मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने न सिर्फ देश की संस्कृति को गहराई से जाना है बल्कि दिलों को जोड़ने वाली उसकी भाषा में महारत भी हासिल की है। कई साहित्यकार ऐसे हैं जो भारत से इतर देशों में हिंदी रचना और विकास के काम में लगे हुए हैं। इनमें दूतावास के अधिकारी और विदेशी विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तो हैं ही, अनेक सामान्य जन भी हैं। जो नियमित लेखन और अध्यापन से विदेश में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के काम में लगे हैं। प्रह्लाद जी जैसे पत्रकार और साहित्यकारों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि उनकी रचनाओं में अपने देश की विभिन्न परिस्थितियों को स्थान मिलता है और इस तरह हिंदी पत्रकारिता और साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय विकास होता है। स्वाभाविक है इससे गैर हिंदी देशों में भी इस भाषा को विस्तार जरूर मिलता है।

II. मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास

पुर्तगाली नाविकों ने 16वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में हिंद महासागर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित निर्जन द्वीप मॉरीशस का दौरा किया। उसी सदी के अंत तक, डच उपनिवेशवादियों ने कब्जा कर लिया और 1710 तक रहे। इसके बाद 1715 में, फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों ने आकर इस पर कब्जा कर लिया। वे बड़ी संख्या में अफ्रीकी और मालागासी दासों को लाए और द्वीप को आबाद किया। अंग्रेजों ने 1810 में द्वीप को अपने अधीन कर लिया। उन्होंने 1833 में दासों को मुक्त कराया, लेकिन चीनी उद्योग को बचाने के लिए, उन्होंने बड़ी संख्या में भारत से गिरमिटिया श्रमिकों को लाया और देश की सतह को बदल दिया। लेकिन 1900 तक, द्वीप में भारतीय निवासियों की स्थिति अभी भी दयनीय स्थिति में थी। [1]

1901 में, मोहनदास करमचंद गांधी, अपने पूरे परिवार के साथ दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय मॉरीशस में 18 दिन बिताए, जब उनका जहाज यहाँ लंगर पर था। [2] गांधी ने अपने हमवतन की दयनीय स्थिति को देखा और उनके लिए कुछ करने की सोची। छह साल बाद, उन्होंने बड़ौदा के बैरिस्टर, मणिलाल डॉक्टर को भारतीय निवासियों की सेवा के लिए भेजा। 1907 से 1911 तक, मणिलाल डॉक्टर ने भारतीयों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया और अपने ठोस

प्रयासों के माध्यम से एक लोकप्रिय जागरण लाया। उन्हीं के प्रयासों से उन्होंने 'हिंदुस्थानी' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। पहले इसे अंग्रेजी और गुजराती में प्रकाशित किया गया और बाद में इसे अंग्रेजी और हिंदी में बदल दिया गया। [3]

'हिंदुस्थानी' अखबार के प्रकाशन के माध्यम से, मणिलाल डॉक्टर ने मॉरीशस में हिंदी आंदोलन की शुरुआत की थी। इसके अलावा, उन्होंने भारतीयों के मन में उनकी पुश्तैनी संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रति एक स्वाभाविक प्रेम के संबंध में एक चेतना लाई थी। इसलिए, भारतीय समुदाय के बीच पुनर्जागरण लाने वाले मणिलाल डॉक्टर का चार साल का लंबा संघर्ष एक स्वाभाविक घटना थी। यह मणिलाल डॉक्टर की पहल के माध्यम से भी है कि स्थानीय आर्य समाज को बढ़ावा मिला और इसे मजबूत किया गया और एक ठोस आधार पर स्थापित किया गया। 1900 में जन्मे डॉ. शिवसागर रामगुलाम, मणिलाल डॉक्टर की सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों और आर्य समाज के सामाजिक-धार्मिक कार्यों से काफी प्रभावित थे। [4] एक नेता के रूप में उन्होंने 1935 के बाद से मॉरीशस का नेतृत्व किया, और लंबे संघर्ष के बाद 1968 में मॉरीशस को मुक्त कराया। 1982 तक प्रधान मंत्री और 1985 तक गवर्नर जनरल के रूप में उन्होंने कार्य किया। सर अनिरुद्ध जगन्नाथ की सरकार ने 1992 में देश को एक गणराज्य में परिवर्तित कर दिया।

III. हिंदुस्थानी की खासियत

मणिलाल डॉक्टर [एम.ए. एलएलबी] 11 अक्टूबर, 1907 को मॉरीशस आए। शुरु से ही उन्होंने एक वकील के रूप में काम करना शुरू किया और द्वीप की अदालतों में भारतीयों का बचाव किया। महात्मा गांधी के दूत होने के नाते, उन्होंने हमेशा मॉरीशस में रहने वाले भारतीय लोगों के अधिकारों के लिए सोचा और संघर्ष किया। जैसे, अपने हमवतन लोगों के हितों की रक्षा और न्याय देने के लिए, उन्होंने 1909 से एक समाचार पत्र, 'द हिंदुस्थानी' का प्रकाशन शुरू किया। इसके पहले पन्ने पर प्रकाशित आदर्श वाक्य थे- व्यक्तियों की स्वतंत्रता! पुरुषों की बंधुता !! नस्ल की समानता !!!, ऐसा लगता है कि मणिलाल डॉक्टर फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव में आए और उन्होंने भारतीय समुदाय के रहन-सहन के बीच "स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व" पर आधारित एक निष्पक्ष सामाजिक व्यवस्था का निर्माण [निर्माण] करने का प्रयास किया था। [5]

इसके अलावा, दैनिक "द हिंदुस्थानी" प्रकाशित करके, मणिलाल

डॉक्टर ने एक तरह से "ले सर्नेन" द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए तत्कालीन फ्रैंकोफोन प्रेस को चुनौती दी थी। इतिहासकार, ऑगस्टे टूसेंट की "मॉरीशस की ग्रंथ सूची" के अनुसार, दोनों पत्र प्रकाशित हुए और दोनों फ्रेंच प्लान्टर्स और फ्रेंच कॉलोनाइजर्स के थे। तदनुसार, 1773 और 1954 के बीच मॉरीशस की धरती पर फ्रेंच और अंग्रेजी में प्रकाशित पत्रों की कुल संख्या 606 थी। उसी सूची में इसी अवधि के दौरान प्रकाशित भारतीय पत्रों की संख्या 23 थी, जिसमें 17 हिंदी पत्रों की संख्या है, 3 तमिल, 2 गुजराती और 2 उर्दू के थे। मॉरीशस में सबसे पहले भारतीय इतिहासकार, पंडित आत्माराम विश्वनाथ [1923] के अनुसार- "कम समय में ही 'द हिंदुस्थानी' ने [फ्रांसीसी] भूमि मालिकों के बीच हलचल पैदा कर दी। मणिलाल डॉक्टर के लेख शानदार और प्रभावी थे। [6] वह किसी के प्रति पक्षपाती नहीं थे। उनका कोड़ा सभी पर लगा, चाहे वह धर्म हो या राजनीति, यूरोपीय हों या भारतीय। वे बहुत अच्छे कमेंटेटर और विश्लेषक भी थे। जो लोग उनकी टिप्पणी से बहुत प्रभावित हुए, वे उनके लेखों के सबसे उत्साही पाठक थे।"

शुरुआत में, "द हिंदुस्थानी" अंग्रेजी और गुजराती में प्रकाशित हुई, लेकिन 1910 से, यह अंग्रेजी और हिंदी में बदल गई। हालाँकि, यह बताना असंभव है कि यह किस तारीख से अंग्रेजी और हिंदी में प्रकाशित हुआ था, क्योंकि 1910 के हिंदी-अंग्रेजी संस्करण की कोई भी फाइल राष्ट्रीय अभिलेखागार या अन्य जगहों पर उपलब्ध नहीं है। लेकिन, राष्ट्रीय अभिलेखागार ने 'द हिंदुस्थानी' की दो प्रतियां संरक्षित की हैं। पहला अंक, जो 15 मार्च, 1909 को प्रकाशित हुआ, अंग्रेजी और गुजराती में है, और दूसरी उपलब्ध प्रति 2 मार्च, 1913 की है और यह अंग्रेजी और हिंदी में है। एक और विचित्रता, दोनों प्रतियां साप्ताहिक हैं और दोनों संबंधित वर्षों में मार्च के महीने में प्रकाशित होती हैं। अब तक दैनिक 'द हिंदुस्थानी' की एक भी प्रति का पता नहीं चला है, फिर भी, इसके अस्तित्व पर सवाल या संदेह नहीं किया जा सकता है क्योंकि समकालीन समाचार पत्रों और सरकारी आधिकारिक दस्तावेज में कई संदर्भ पाए जाते हैं, अर्थात् "मॉरीशस की कॉलोनी की ब्लू बुक"।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे एम.के. गांधी को दैनिक 'द हिंदुस्थानी' का ज्ञान था और यहां 'द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' का उद्धरण देना उचित है, जिसमें एक जगह गाँधी जी ने कहा है - "उन्होंने [मणिलाल] ने बहुत बड़ी गलती कर दी अपने अखबार [द हिंदुस्थानी] को दैनिक में बदलने में।

जैसा है, उसमें कोई मूल्य नहीं है। प्रकार खराब हैं, कागज खराब है और पदार्थ भी ऐसा ही है। मॉरीशस में उनके पास सक्षम सहायक नहीं हैं। तो फिर, एक उचित समाचार पत्र कैसे लाया जा सकता है? इसके अलावा, पाठक कहाँ हैं?"

इतिहासकार पंडित आत्माराम विश्वनाथ के अनुसार, मणिलाल डॉक्टर ने 1911 में पोर्ट लुइस आर्य समाज की नींव में सहायता की थी, और उन्होंने सितम्बर 1911 में मॉरीशस छोड़ते समय आर्य समाज के उस विंग को अपना प्रेस और अपना अखबार 'द हिंदुस्थानी' दे दिया था।

IV . 'मॉरीशस आर्य पत्रिका'

पंडित आत्माराम विश्वनाथ के अनुसार, 8 अप्रैल 1911 को पोर्ट लुइस आर्य समाज की स्थापना मणिलाल डॉक्टर की उपस्थिति में की गई थी, जिसमें मेसर्स जैसे कुछ प्रबुद्ध सदस्यों की मदद से गयासिंह, रामजीलाल, माधोलाल, चुनूर, लेखराम, खेरसिंह आदि शामिल थे। पदाधिकारियों में खेमलाल लल्लाह, अध्यक्ष, गुरुप्रसाद दुलजीतलाल, सचिव और खेरसिंह, कोषाध्यक्ष थे। पं. जगन्नाथ को एक प्रचारक के रूप में नियुक्त किया गया था। जबकि पं. रामावध शर्मा भी एक उपदेशक थे और उन्हें 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' के संपादन की जिम्मेदारी दी गई थी।

इस प्रकार, 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' इस देश में स्थानीय आर्य समाज का पहला अंग बन गया। यह 1 जून 1911 को प्रकाशित हुआ था। ए. टूसेंट और एच. एडोल्फ के अनुसार, यह एक पाक्षिक पत्र था, जो अंग्रेजी और हिंदी में छपा था। पहले संपादक खेमलाल लल्लाह थे, जो स्थानीय आर्य समाज के पिता थे। उनकी बीमारी और बाद में उनके निधन के बाद, स्वामी स्वतंत्रानंद ने इसे थोड़े समय के लिए संपादित किया था। यह 1914 में दिखना बंद हो गया।

V. ओरिएंटल गजट

बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में भारतीय आबादी के बीच पुनर्जागरण लाने वाला आर्य समाज आंदोलन वास्तव में इस देश में हिंदी पत्रकारिता और पत्रिकाओं के जन्म और विकास के लिए जिम्मेदार था। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि भारतीय समुदाय के रुढ़िवादी वर्ग ने भी आर्य समाज आंदोलन के हमले पर प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, और दूसरी ओर, इसने उनमें एकता ला दी और उन्हें प्रगतिशील दर्शन के खिलाफ विरोध करने के लिए प्रेरित किया।

इसलिए, रुढ़िवादी वर्ग के नेता रामलाल तिवारी ने 'द ओरिएंटल

गजट' की स्थापना की। यह अंग्रेजी और हिंदी में प्रकाशित हुआ था। यद्यपि इसका नाम "ब्लू बुक" में नहीं है और न ही "मॉरीशस की ग्रंथ सूची" में, फिर भी इसके अस्तित्व पर संदेह नहीं किया जा सकता है, क्योंकि 'ओरिएंटल गजट' के दो मुद्दों की उपस्थिति का उल्लेख 'प्लांटर्स एंड कमर्शियल गजट' में किया गया है।

VI. हिन्दी पत्रकारिता का पुनरुत्थान

1912 में मॉरीशस छोड़ने से पहले, मणिलाल डॉक्टर ने 'द हिंदुस्तानी' को संपादित करने के लिए पूना, [भारत] से पंडित आत्माराम विश्वनाथ को बुलाया था। 1912 में पंडित जी यहां आए थे। उसी तरह, मणिलाल डॉक्टर के कठोर संघर्ष से प्रभावित होकर, युवा काशीनाथ किष्टो उच्च अध्ययन के लिए भारत गए। हालांकि पं. आत्माराम विश्वनाथ एक महाराष्ट्रियन थे और पं. काशीनाथ किष्टो एक बंगाली थे, फिर भी दोनों हिंदी के प्रति उत्साही थे और दोनों की रगों में पत्रकारिता का कौशल था [7]

1920 के दशक में हिंदी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का पुनरुत्थान विभिन्न कारणों से महत्वपूर्ण था। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान कोई हिंदी अखबार न होने के क्या कारण रहे हैं? क्या यह एक सक्षम भारतीय नेता या संपादक की अनुपस्थिति थी, या प्रथम विश्व युद्ध की अनिवार्यता थी? कारण जो भी हो, इस बीच हुई दो घटनाओं का मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता के विकास पर सीधा प्रभाव पड़ा।

सबसे पहले, 1915 में भारत के लाहौर से भारत-मॉरीशस वैदिक मिशनरी पंडित काशीनाथ किष्टो का आगमन हुआ। आते ही वे एक उपदेशक के रूप में आर्य परोपकारिणी सभा में शामिल हो गए। शुरुआत में, उन्होंने स्वामी स्वतंत्रानंद को पूरे द्वीप में वैदिक धर्म का प्रचार करने में सहायता की। 1916 में, जब स्वामी जी अपनी बीमारी के कारण भारत के लिए रवाना हुए, 1926 तक किष्टो अकेले ही सेवा करते रहे। अपने मिशनरी उत्साह में, उन्होंने 1 अगस्त, 1918 को दस विद्यार्थियों के साथ आर्य वैदिक स्कूल ऑफ वाकोस की स्थापना की। उन्होंने पूरे द्वीप में आर्य समाज की दर्जनों शाखाएँ भी खोलीं।

1920 के दशक में उन्होंने 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' का पुनः संपादन शुरू किया था।

दूसरी घटना 1915 में रामखेलावन बौधुन, प्रथम इंडो-मॉरीशस बैरिस्टर का आगमन था। रामखेलावन वकील के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड जाने से पहले बूधुन आर्य समाज की क्यूपीप शाखा के सदस्य थे। 1915 में, उन्होंने लंदन में व्हाइट हॉल में

अपने व्याख्यान में भाग लेने के दौरान महात्मा गांधी को देखा था। वह गांधी के दर्शन से प्रभावित थे; बाद में उन्हें 1943 में उस संत की जीवनी लिखी थी।

भारतीय समुदाय के भीतर एक दूरदर्शी नेता होने के नाते, आर.के. बुधुन ने मणिलाल डॉक्टर के रास्ते पर चलने की सोची और सक्रिय राजनीति में शामिल हो गए। इसलिए, रोज हिल के कावलेसुरसिंह के सहयोग से, उन्होंने भारतीय समुदाय के लिए एक समाचार पत्र की आवश्यकता महसूस की, और उन्होंने 6 दिसंबर, 1920 से एक द्विभाषी दैनिक 'द मॉरीशस इंडियन टाइम्स' शुरू किया। यह अंग्रेजी, फ्रेंच और हिंदी में प्रकाशित होने वाला एक राजनीतिक समाचार पत्र था। 1 अगस्त, 1924 से 'मॉरीशस इंडियन टाइम्स' का आना बंद हो गया।

1920 के मध्य तक भारत-मॉरीशस के बीच एक और नेता उभरा था। वह कोई और नहीं बल्कि राजकुमार गुजाधुर थे। इसलिए, मणिलाल डॉक्टर और आर.के. बुधुन ने 25 अगस्त, 1924 से एक और दैनिक 'मॉरीशस मित्र' [मॉरीशस के मित्र] की शुरुआत की। यह एक राजनीतिक समाचार पत्र भी था, जो अंग्रेजी, फ्रेंच और हिंदी में प्रकाशित होता था। संपादक थे पं. रामावध शर्मा, हिंदी अनुभाग के लिए, और पं. मुक्ताराम अंग्रेजी और फ्रेंच अनुभाग के लिए। यह 1932 तक चला।

1920 के दशक में आर्य समाज आंदोलन फिर से शुरू हुआ, क्योंकि उस दशक में स्वामी दयानंद सरस्वती की जन्म शताब्दी मनाई जानी थी। इसके अलावा, भारत से एक और वैदिक मिशनरी, पंडित बेनीमाधो सुतीराम और फ्रांस में अध्ययन करने वाले पहले मॉरीशस के हिंदी भाषी चिकित्सक डॉ. जुगरू सीगोबिन का आगमन आंदोलन को मजबूत करना था। इसलिए पंडित बेनीमाधो की देखरेख में काशीनाथ किष्टो, आर्य परोपकारिणी सभा ने 12 अक्टूबर, 1924 से 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' की पुष्टि की। यह मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक अग्रणी कार्य था।

VII. आर्य वीर का जन्म

स्वामी दयानंद सरस्वती की मृत्यु के स्मरणोत्सव के बाद, आर्य परोपकारिणी सभा की सहायक 'आर्य कुमार सभा' में नए युवा सूचीबद्ध सदस्यों ने बाद के तंत्र को अपने हाथों में ले लिया और आर्य परोपकारिणी सभा से पंडित काशीनाथ किष्टो, गुरुप्रसाद दलजीतलाल, पंडित गयासिंह, चुतूर मास्टर सहित सभी संस्थापक

सदस्यों को निष्कासित कर दिया। परिणामस्वरूप 1927 में आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्माण हुआ। पंडित काशीनाथ किष्टो को एक अन्य अंग [समाचार पत्र] शुरू करने का कार्य आवंटित किया गया था। इस प्रकार, 'आर्य वीर' ने 3 मई, 1929 को दिन का प्रकाश देखा। इसके संपादक पंडित काशीनाथ किष्टो अथक आर्य समाजवादी मिशनरी थे। 1947 में अपनी मृत्यु तक वे साप्ताहिक 'आर्य वीर' का संपादन करते रहे। [8]

VIII. सनातन धर्मार्क

हिंदू धर्म के रुढ़िवादी अनुयायियों ने 'सनातन धर्मार्क' ['अनन्त कर्तव्य का सूर्य'] का प्रकाशन शुरू किया। यह एक साप्ताहिक पत्र था जो 15 दिसंबर, 1933 से प्रकाशित हुआ था। इसके संपादक नरसिंह दास थे। वह साप्ताहिक प्रकाशन अंग्रेजी, फ्रेंच और हिंदी में छपा। नरसिंह दास हिंदू धर्म के रुढ़िवादी स्कूल के एक प्रतिपादक थे और वह हमेशा स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के धार्मिक सिद्धांतों के साथ विवाद में थे। इसलिए एक ओर 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' और 'आर्य वीर' के स्तंभों में और दूसरी ओर 'सनातन धर्मार्क' के स्तंभों में एक-दूसरे के तर्कों का खंडन करने के लिए तीखी आलोचनाएँ सामने आईं। लंबे समय में इस तरह के विवाद ने कमजोरियों के प्रति जागरूकता पैदा की और आत्म-सुधार की भावना इस देश में भारत-मॉरीशस के मन को जगाने के लिए थी। इस प्रतियोगिता का दुष्परिणाम यह हुआ कि 1942 से 'सनातन धर्मार्क' समाप्त हो गया जबकि 'आर्य वीर' और 'जागृति' 1950 के दशक तक प्रदर्शित होते रहे।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक तक, मॉरीशस ने हिंदी भाषा में चार सामाजिक-राजनीतिक पत्र प्रकाशित किए थे। लेकिन, वास्तविक अर्थों में, तब तक कोई हिंदी साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित नहीं हुई थी। इस शून्य को लॉन्ग माउंटेन गांव की हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रमुख नेता सूरज प्रसाद मुंगुर भगत को भरना था। इसलिए, "दुर्गा" [माँ देवी] पहली हस्तलिखित साहित्यिक [हिंदी] पत्रिका थी जिसे जनवरी 1936 से हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित किया गया था। यह एक मासिक पेपर था।

IX. 1940 के दशक में हिन्दी पत्रों की बाढ़

1910 से 1940 तक, मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता में सुधारकों के समूह और हिंदुओं के रुढ़िवादी वर्गों के बीच प्रतिद्वंद्विता देखी गई

थी, वह आर्यसमाजवादी और सनातनवादी है। यह एक तथ्य है कि उनके बीच धार्मिक संघर्षों ने इस देश में हिंदी पत्रकारिता के विकास और विकास को काफी हद तक प्रेरित किया। लेकिन, बीसवीं सदी के तीसरे दशक में, डॉ. शिवसागर रामगुलाम [1935], जयनारायण राय [1937], और पंडित बासुदेव विष्णुदयाल [23 दिसंबर 1939] का क्रमिक आगमन सामान्य रूप से मॉरीशस के लिए एक महान वरदान था, और विशेष रूप से स्थानीय हिंदी पत्रकारिता के विकास के लिए। [9]

डॉ. शिवसागर रामगुलाम 1935 में इंग्लैंड से आए, खुद को मॉरीशस की राजनीति में फेंक दिया, सरकार की परिषद में नामांकित सदस्य बने, और वे नवंबर-दिसंबर 1940 में पोर्ट लुइस नगर पालिका के निर्वाचित सदस्य भी बने। जयनारायण राय 1937 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि के साथ, मॉरीशस वापस आ गए। उन्होंने खुद को हिंदी के लिए समर्पित कर दिया और खुद को लॉन्ग माउंटेन की 'हिंदी प्रचारिणी सभा' से जोड़ लिया। उन्होंने 'मॉरीशस आर्य पत्रिका', 'आर्य वीर' में नियमित रूप से योगदान दिया और बाद में 4 मई, 1948 से डॉ. शिवसागर रामगुलाम द्वारा स्थापित एक हिंदी पेपर 'जनता' के संपादक बने। [10]

सर्नेन-ले मौरिसियन-एडवांस के अनुसार अपने मिशन को पूरा करने के लिए सूकदेव विष्णुदयाल ने 8 जून, 1948 से एक हिंदी त्रैमासिक 'जमाना' शुरू किया। यह अंग्रेजी, फ्रेंच और हिंदी में प्रकाशित एक त्रिभाषी पत्र था। इसके आधिकारिक संपादक के. कूराराम थे और ऐसा लगता है कि पं. बासदेव विष्णुदयाल ने इसका हिंदी खंड देखा।

X. 'आर्योदय' और हिन्दी की अन्य पत्र-पत्रिकाएं

चैंप दे मार्स, पोर्ट लुइस में निर्धारित 26 जनवरी 1950 को "भारत के गणतंत्र दिवस समारोह" में भाग लेने के लिए, स्वामी स्वतंत्रानंद और मणिलाल डॉक्टर आए थे, पहला भारत से और दूसरा अदन से। स्वामी स्वतंत्रानंद की सलाह पर उत्सव के बाद, आर्य समाज [परोपकारिणी और प्रतिनिधि] के दोनों गुट "आर्य सभा मॉरीशस" में विलीन हो गए और उसी भावना से 'आर्य वीर'-जागृति को 'आर्योदय' में शामिल किया गया। इसका पहला अंक 9 नवंबर 1950 को सामने आया। इसके संपादक पंडित आत्माराम विश्वनाथ थे, और यह शुद्ध हिंदी में था। [11]

पंडित रामसेवक तिवारी ने 18 सितंबर 1953 से एक और विशुद्ध हिंदी अखबार शुरू किया था। इसे 'वर्तमान' कहा जाता था। यह

ज्योति प्रेस से प्रकाशित एक हिंदी पेपर था। पं. रामसेवक तिवारी इसके संपादक थे। यह एक साहित्यिक पत्रिका थी। इसने अपने कॉलम नवोदित हिंदी लेखक मुनीश्वरलाल चिंतामुनी के लिए खोले थे। यह जून 1954 से दिखना बंद हो गया।

उधर 'जनता' साप्ताहिक, जिसे पंडित लक्ष्मी प्रसाद बद्री द्वारा 1953 से संपादित किया गया था, अक्टूबर 1974 में बढ़ाया गया, जब राजेंद्र अरुण को इसका संपादक नियुक्त किया गया। राजेंद्र अरुण भारत के एक प्रतिष्ठित पत्रकार थे और मॉरिशस में उनकी उपस्थिति ने इस देश में हिंदी पत्रकारिता को एक महत्वपूर्ण आयाम दिया। आर्य सभा मॉरिशस ने भी 1970 के दशक से अपने अंग, 'आर्योदय' का जीर्णोद्धार किया था। इसने विशेष अवसरों पर पुस्तक के रूप में विशेष अंक प्रकाशित करना भी शुरू कर दिया है। आर्य सभा की युवा शाखा ने प्रो. सूदुरसन जुगोसुर के मार्गदर्शन में 1977 से 'वैदिक जर्नल' का प्रकाशन शुरू किया था। यह अंग्रेजी और हिंदी में एक द्विभाषी पत्रिका थी। यह 1979 में दिखना बंद हो गया। हिंदू महासभा के तत्वावधान में दयानंदलाल बसंत राय ने 1972 से एक धार्मिक पत्रिका 'शिवरात्रि' के विशेष अंक का प्रकाशन शुरू किया था। इसके प्रमोटर की मृत्यु के बाद 1984 में इसका प्रकाशन बंद हो गया। [12] 1982 के आम चुनावों में सर शिवसागर रामगुलाम की हार के बाद हिंदी पत्रकारिता को बड़ा झटका लगा था। डॉ. शिवसागर रामगुलाम 42 साल तक विधान सभा के सदस्य रहे और 14 साल तक मॉरिशस के प्रधान मंत्री रहे। उन्हें अपने पूरे राजनीतिक जीवन में 'एडवांस' और 'जनता' का समर्थन मिला था। 34 साल बाद 1982 के आम चुनाव के बाद 'जनता' का दिखना बंद हो गया। हिंदी पत्रकारिता को पहला झटका 1976 के आम चुनावों के बाद लगा, जब सूकदेव विष्णुदयाल की हार हुई और कुछ हफ्ते बाद 'जमाना' का आना बंद हो गया। सूकदेव विष्णुदयाल 38 वर्षों तक विधान सभा के सदस्य थे, और एक शक्तिशाली विपक्षी नेता के रूप में उभरे थे। वह 1948 में 'जमाना' के सह-संस्थापक थे।

1982 से 1987 तक 'आर्योदय', 'वसंत' और 'शिवरात्रि' के अलावा कोई हिंदी पत्र और पत्रिकाएं नहीं थीं, जब ह्यूमन सर्विस ट्रस्ट ने अस्सी के दशक के शुरुआती वर्षों में एक पूर्ण हिंदी साप्ताहिक "स्वदेश" शुरू करके शून्य को भर दिया। यह 12 पेज का पेपर था। धनदेव बहादुर के नेतृत्व में प्रकाशित इस अखबार में अजामिल माताबदल और राज हीरामन 'स्वदेश' के सह-संपादक थे। यह 1991 तक दिखाई देता रहा। सुरेश रामबर्न ने सनातन धर्म मंदिर संघ के

तत्वावधान में एक और हिंदी साप्ताहिक की स्थापना की थी। इसका नाम 'दर्पण' था। यह 1989 से 1990 तक दिखाई दिया।

अक्टूबर 1988 में प्रह्लाद रामशरण की देखरेख में इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद की स्थापना की गई। परिषद ने एक हिंदी त्रैमासिक, 'इंद्रधनुष' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। प्रह्लाद जी इसके संपादक बनाये गए और तब से अब तक वही इस पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। इसने हिंदी रचनाओं में छद्म नाम के लेखन को उजागर करने के लिए विशेष अंक प्रकाशित करना शुरू किया, चाहे वह इतिहास में हो या मॉरिशस साहित्य में। [13]

इसने 1988 से 1999 तक विशेष रूप से हिंदी भाषा में विशेष अंक निकाले। इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद ने 2000 से 'इंद्रधनुष' पत्रिका को त्रिभाषी अर्थात् हिंदी, अंग्रेजी और फ्रेंच में बनाकर पत्रों की दुनिया में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। तीनों भाषाओं में अलग-अलग समय में इंद्र धनुष ने कई महान हस्तियों पर विशेष अंक निकाले। इनमें श्रीनिवास जगदत्त, मणिलाल डॉक्टर, जवाहरलाल नेहरू, डॉ सर शिवसागर रामगुलाम, सूर्य प्रसाद मंगर भगत, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, प्रोफेसर रामप्रकाश, लखावती हरगोविंद, जयनारायण राय, दयानन्द लाल बसंतराय, सोमदत्त बखोरी, राजकुमारी इंदिरा देवी धनराजगीरजी, जॉन दे लिंगन- किलबर्न, डॉ मुनीश्वरलाल चिंतामणि, मोहनदास करमचंद गाँधी, रॉबर्ट एडवर्ड हार्ट, मार्सेल काबों और पंडित काशीनाथ किष्टो सहित कई विद्वानों पर विशेषांक शामिल है। [14]

XI. अन्य प्रमुख प्रकाशन

शासकीय शिक्षक संघ ने 1990 से हिन्दी पत्रिका 'आक्रोश' का प्रकाशन शुरू किया। यह पहले त्रैमासिक था, लेकिन बाद में 1992 से मासिक हो गया। यह विशेष रूप से हिंदी में प्रकाशित हुआ, लेकिन बाद में, इसे त्रिभाषी में बदल दिया गया, जो अंग्रेजी, फ्रेंच और हिंदी में है। यह अभी भी वैसे ही प्रकाशित किया जा रहा है। और 1990 से 1992 तक, राजनारायण गुट्टी ने बच्चों की पत्रिका, 'मुक्ता' प्रकाशित की।

हिन्दी प्रचारिणी सभा ने 1990 से हिन्दी पत्रिका 'पंकज' भी शुरू की और यह अभी भी तिमाही आधार पर प्रकाशित हो रही है। यह एक साहित्यिक पत्र है। अजामिल माताबदल इसके संपादक थे। उसी दशक में, "हिंदी स्पीकिंग यूनियन" ने एक बाल पत्रिका 'सुमन' शुरू की। महात्मा गांधी संस्थान ने उसी दशक में एक और बाल पत्रिका 'रिमझिम' भी शुरू की। [15]

डॉ. सरिता बुद्ध ने हरीश बुद्ध के सहयोग से 2001 से एक साप्ताहिक 'जनवाणी' का प्रकाशन शुरू किया। यह बारह पृष्ठों का एक पूर्ण पेपर था। कई नवोदित लेखकों ने भी इसमें योगदान दिया। लेकिन यह 2006 से बंद हो गया।

XII. रेडियो- टेलीविज़न में हिंदी

मॉरीशस में हिंदी के समाचार पत्र अब भले न हो, यहाँ के रेडियो और टेलीविज़न ने इस भाषा को आज भी जिन्दा रखा है। जिसमें हिंदी और भोजपुरी के नियमित समाचार और दूसरे कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। [16]

मॉरीशस टीवी यानि एमबीसी को 8 जून 1964 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन ऑर्डिनेंस नंबर 7 [1964] के तहत एक कॉरपोरेट बॉडी के रूप में स्थापित किया गया था। उस तिथि से पहले यह मॉरीशस प्रसारण सेवा के नाम से एक सरकारी सेवा के रूप में संचालित होता था। मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन की स्थापना करने वाले मूल अध्यादेश को संसद के अधिनियमों द्वारा संशोधित और समेकित किया गया था। अधिनियम संख्या 65 [1970], अधिनियम नं 22[1982] और अधिनियम नं 65 [1985]। ये संशोधन तकनीकी और सामाजिक दोनों स्तरों पर अन्य परिवर्तनों को समायोजित करने के साथ-साथ मॉरीशस राष्ट्र के सभी वर्गों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक थे। टीवी प्रसारण 1964 में फोर्ट जॉर्ज, माउंट थेरेसे और जुरानकॉन में तीन पुनरावर्तक स्टेशनों की स्थापना के साथ पायलट आधार पर शुरू हुआ। 8 फरवरी 1965 को, टेलीविज़न को आधिकारिक तौर पर लगभग तीन घंटे के दैनिक शाम के प्रसारण के साथ लॉन्च किया गया था। पहला लाइव स्थानीय कार्यक्रम 1968 में उनकी रॉयल हाईनेस प्रिंसेस एलेक्जेंड्रा की यात्रा के अवसर पर प्रसारित किया गया था।

ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविज़न की चरणबद्ध प्रक्रिया 1973 में शुरू हुई थी जब महात्मा गांधी संस्थान में OCAMM सम्मेलन आयोजित किया गया था। 1978 तक एमबीसी रंगीन कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए पूरी तरह से सुसज्जित था। MBC ने 7 नवंबर 1987 को रॉड्रिक्स में इसका संचालन शुरू किया। एक दूसरा चैनल 30 जुलाई 1990 को लॉन्च किया गया था। MBC -3 मार्च 1996 में चालू हुआ। 2005 में, MBC अफ्रीका में लॉन्च होने वाला पहला सार्वजनिक टेलीविज़न प्रसारक था। 2007 में, एमबीसी ने रॉड्रिक्स और अगालेगा द्वीपों के लिए अपनी डिजिटल सेवा का विस्तार भी

किया। 2011 में, MBC अपने पूर्व मुख्यालय फ़ॉरेस्ट साइड, क्यूपीप से मोका स्थानांतरित हो गया। 2013 जनवरी में भोजपुरी चैनल और सेन क्रेओल को लॉन्च किया गया था।

XIII. हिंदी पत्रकारिता में प्रह्लाद रामशरण का योगदान

साहित्यकार, इतिहासकार, स्वतंत्र पत्रकार और शिक्षक के रूप में प्रह्लाद रामशरण का हिंदी साहित्य में बड़ा योगदान है। 1997 में अवकाश ग्रहण करने के बाद भी उनकी लेखनी रुकी नहीं है। आज भी वे नियमित रूप से स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं। 1988 से त्रिभाषी पत्रिका 'इंद्रधनुष' के प्रधान संपादक हैं। हिंदी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच में प्रकाशित मॉरीशस की यह पहली अंतरराष्ट्रीय पत्रिका है। मॉरीशस विश्वविद्यालय में ओरियंटल भाषा विभाग के अध्यक्ष पद से पूर्व 1974 से 1979 तक प्रह्लाद रामशरण मॉरीशस के प्रतिष्ठित रॉयल कॉलेज, क्यूपीप में शिक्षा अधिकारी के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। कई देशों की यात्रा कर चुके प्रह्लाद रामशरण को हिंदी सेवा एवं साहित्यिक कार्यों के लिए भारत में भी सम्मानित किया जा चुका है। [17]

अबतक प्रह्लाद रामशरण की हिंदी में करीब 100 कृतियां प्रकाशित हो चुकी है। अंग्रेज़ी में लेखक सिद्धस्थ हैं। इस भाषा में उनकी तीन पुस्तकें मिलती हैं। जिनमें दो धार्मिक पुस्तकें हैं। फ्रेंच भाषा में उनकी एक पुस्तक है जो धार्मिक है। अंग्रेज़ी की एक साहित्य कृति है - 'द फोकटेल्स ऑफ मॉरीशस'।

1982-84 के बीच प्रह्लाद रामशरण आर्य सभा मॉरीशस से सक्रिय रूप से जुड़े। इस दौरान उनको आर्य सभा के पाक्षिक पत्र आर्योदय का संपादन करने का भार भी संभालना पड़ा। इस कार्य से उनको पत्रकारिता के क्षेत्र में काफी अनुभव मिला। उन्होंने आर्योदय के कई अंकों में उक्त पत्र के कायाकल्प की अपेक्षा की। उन्होंने कहा कि -

" आर्योदय आर्य सभा मॉरीशस का मुख्य पत्र है। इसके द्वारा आर्य सभा की गतिविधियों का यथार्थ परिचय पाठकों को मिलते रहना चाहिए। " फिर उन्होंने सभी को अपने-अपने उत्तरदायित्व की पहचान कराई। उनके इस कार्य से अच्छी प्रतिक्रियाएं आईं। एक युवा पाठक ने लिखा कि आर्योदय की पृष्ठ संख्या बढ़ाई जाए। उसमें बाल संसार, युवा जगत और महिला जगत स्तम्भ शुरू किया जाए। उसमें देश विदेश के संक्षिप्त लेकिन रोचक समाचार भी प्रकाशित किए जाए।

इसपर रामशरण जी ने लिखा कि ऐसा तभी संभव है जब हमारे बीच

सुयोग्य विद्वान् और पत्रकार हो। पत्रकारिता एक प्रोफेशन ही नहीं, एक सशक्त विद्या भी है। [18]

उन्होंने 31 दिसम्बर 1982 के अंक में कहा - " हमारा दृढ़ संकल्प है कि भविष्य में आर्योदय की पृष्ठ संख्या बढ़ाएंगे और नियत तिथि पर प्रकाशित करके ठीक समय पर पाठकों तक पहुंचने का काम करेंगे। जिससे आपके हृदय में आर्योदय के प्रति जो स्नेह है उसका उत्तरोत्तर विकास हो। "

लेकिन उनका संकल्प पूरा नहीं हो पाया। क्योंकि कार्यकारिणी समिति में परिवर्तन आगया। ऐसे में वे न मंत्री न संपादक का कार्य संभाल सके। तब से वे स्वतंत्र रूप से कार्य करते आ रहे हैं। परिणामस्वरूप 1988 के आरम्भ में उन्होंने दस पुस्तकों का एक साथ विमोचन कराया। फिर उन्होंने इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् की स्थापना की और दिसंबर 1988 से उसकी ओर से इंद्रधनुष पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। इस पत्रिका के जरिए प्रह्लाद रामशरण कहानीकार, पत्रकार, शोधकर्ता, समीक्षक आदि के रूप में विकसित हुए। उन्होंने अपने शोध के बल पर इंद्रधनुष के विशेषांकों का सिलसिला शुरू किया। इस प्रयास से दस साल के अंदर उन्होंने तेरह विशेषांकों का प्रकाशन किया। जिसके जरिए उन्होंने अनेक विभूतियों के नाम उजागर किए। इस काम से देश विदेश से प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई। दिल्ली के लेखक और मॉरीशस को करीब से समझने वाले कमल किशोर गोयनका ने लिखा है-"मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता को जीवित रखने के लिए यह एक सत्प्रयास है।"

निष्कर्ष

जिस देश में कई बार विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ हो, वहां वर्तमान में न तो कोई हिंदी दैनिक और न ही कोई हिंदी साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हो रहा है। मॉरीशस के पूरे प्रेस पर आधा दर्जन फ्रांसीसी दैनिक और फ्रांसीसी साप्ताहिक का कब्जा है। मॉरीशस में आज की हिंदी पत्रकारिता विशेष रूप से 'आर्योदय', 'वसंत', 'पंकज', 'इंद्रधनुष', 'रिमझिम', 'आक्रोश' और 'विश्व हिंदी पत्रिका' पर आधारित है।

हालांकि हिंदी अखबारों और पत्रिकाओं की फाइलों को खंगालने के बाद कई बातें सामने आई हैं। पहला, भारत के बाहर किसी भी देश ने हिंदी भाषा में इतने समाचार पत्र और पत्रिकाएँ प्रकाशित नहीं की हैं। दूसरे, भारत के शीर्ष समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में योगदान देने के लिए भारत में कई इंडो- मॉरीशस लेखकों और पत्रकारों को सम्मानित किया गया है। तीसरा, आर्य समाज के कागजों का पैनोरमा सनातनवादी अखबारों से काफी बड़ा रहा है। चौथा, बीसवीं सदी में समाचार पत्रों की सामग्री राजनीतिक और

साहित्यिक के बजाय सामाजिक और धार्मिक मामलों तक ही सीमित थी। हिंदी का पेपर भले ही आज यहाँ न हो इस भाषा को लेकर सरकारी स्तर पर देश गंभीर है यह साफ़ दिखता है। कई हिंदी प्रेमी मॉरीशस में हुए तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन को इस देश के लिए बड़ा सम्मान मानते हैं। क्योंकि यहीं पर प्रवासी भारतीयों के प्रवास का 'महान प्रयोग' हुआ है। अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में बाद के प्रसार से पहले, भारतीय गिरमिटिया श्रम शुरू किया गया था और क्षेत्र-परीक्षण किया गया था। इनकी नजर में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना भी मॉरीशस को दिए गए महत्वपूर्ण स्थान का एक और प्रमाण है, जहां दूसरा और चौथा सम्मेलन क्रमशः 1976 और 1993 में आयोजित किया गया था।

भारत की आजादी के 75 वें वर्ष के जश्न के मौके पर मॉरीशस में भी कई आयोजन हुए। कई संगठनों ने भी छोटे बड़े कई कार्यक्रम किये। खास बात ये थी सभी आयोजनों का संचालन हिंदी में हुआ और मीडिया में भी हिंदी खबरों में इसे प्रमुखता दी गई। कुछ बड़े आयोजन महात्मा गाँधी संस्थान में हुए। एक समारोह में हिंदी पत्रिका बसंत ने बाल कहानियों का विशेषांक प्रकाशित किया। जिसमें भारतीय लेखकों की रचनाएँ भी शामिल की गई थी। पत्रिका के प्रकाशन का मकसद हिंदी से लोगों को जोड़े रखना है। बसंत पत्रिका के संपादक कहते हैं - भाषा और संस्कृति साथ-साथ चलती है। भाषा लुप्त होती है तो संस्कृति नष्ट होती है। इस प्रकार के समारोह का आयोजन यह सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है कि विदेशों में रहने वाले भारतीय इसे न भूलें।

निश्चित रूप से मॉरीशस में हिंदी को भुलाया नहीं गया है, और हर साल मॉरीशस के लेखकों द्वारा हिंदी में कई किताबें प्रकाशित की जाती हैं।

अभिमन्यु अनत, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव धुरंधर, राज हिरामन, राजेंद्र अरुण ऐसे नाम हैं, जिन्होंने अपने कार्यों के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते, कुछ की रचनाओं का फ्रेंच और अंग्रेजी में अनुवाद भी किया गया है। मॉरीशस टाइम्स के संस्थापक, स्वर्गीय श्री बीकमसिंग रामलला ने 1960 में एक हिंदी समाचार पत्र, नव-जीवन की भी स्थापना की, जो कई वर्षों तक मॉरीशस टाइम्स के पूरक के रूप में प्रकाशित हुआ था। इसका संपादन सूरज प्रसाद मुंगुर भगत ने किया था।

हजारों मॉरीशसवासी हैं जो हिन्दी समझते हैं और बोलते भी हैं। यह महसूस करने के लिए कि कई श्रोताओं के पास हिंदी और भोजपुरी की अच्छी कमान है, केवल रेडियो टॉक-इन कार्यक्रमों को सुनना होगा। दूसरी ओर, पिछले कुछ वर्षों में मैंने पाया है कि भारत-मॉरीशस की आबादी में, संबंधित समुदायों की सभाओं में यहां इस्तेमाल की जाने वाली अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिंदी/भोजपुरी में बातचीत करने वाले लोगों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होगी। बावजूद इसके सनातन धर्म से जुड़ा कोई साप्ताहिक या दैनिक अखबार आज नहीं है। अगर धीरे धीरे फ्रेंच और

क्रियोल के साथ हिंदी को दैनिक बोलचाल में उपयोग में लाया जाए तो हिंदी के समाचार पत्र और पुस्तके भी यहां फ्रेंच अंग्रेजी की तरह लोक प्रिय हो सकती हैं।

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. मॉरीशस : हिन्द महासागर में एक नवोदित गणराज्य - प्रह्लाद रामशरण, पृष्ठ -94
2. मॉरीशस : हिन्द महासागर में एक नवोदित गणराज्य - प्रह्लाद रामशरण, पृष्ठ -20
3. प्रह्लाद रामशरण : साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेक्ता, राजेंद्र सिंह कुशवाहा, पृष्ठ - 420
4. मॉरीशसीय संस्कृति और एक साहित्यकार की आस्था - प्रह्लाद रामशरण, पृष्ठ -38
5. प्रह्लाद रामशरण : साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेक्ता, पृष्ठ - 421
6. इंद्रधनुष - मणिलाल विशेषांक - अंक - , वर्ष -
7. भारतीय वाङ्मय में मॉरीशस की संस्कृति- प्रह्लाद रामशरण, पृष्ठ -112
8. प्रह्लाद रामशरण : साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेक्ता, राजेंद्र सिंह कुशवाहा, पृष्ठ - 422
9. प्रह्लाद रामशरण : साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेक्ता, राजेंद्र सिंह कुशवाहा, पृष्ठ - 423
10. पंडित राजेंद्र अरुण - राम काज करिबेको आतुर, पृष्ठ - 33
11. इंद्रधनुष -पंडित आत्माराम विश्वनाथ , अंक - 33 वर्ष - [24] 2012
12. मॉरीशसीय संस्कृति और एक साहित्यकार की आस्था - प्रह्लाद रामशरण, पृष्ठ -39
13. प्रह्लाद रामशरण -केंद्र और विस्तार, पृष्ठ -127
14. इंद्रधनुष- मासेल काबों और डॉक्टर मणिलाल विशेषांक, अंक 28- वर्ष - [19] 2007
15. प्रह्लाद रामशरण : साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेक्ता, राजेंद्र सिंह कुशवाहा, पृष्ठ - 420
16. <https://mbcradio.tv/history>
17. प्रह्लाद रामशरण : साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेक्ता, राजेंद्र सिंह कुशवाहा -423
18. मॉरीशस गणराज्य -भारतीय संस्कृति का हलवाल दस्ता -प्रह्लास रामशरण, पृष्ठ -223